राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद सम्पन्न: मन की निर्मलता ही भक्ति है: प्रोफेसर चारण

ओम एक्सप्रेस

डूंगरपुर। राजस्थानी भक्ति परम्परा अपने आप में अद्भुत है। यह मन एवं चित्त में भेद करती है। मन का संबंध संकल्प से और चित्त का संबंध चेतना से जुड़ा हुआ है। मनुष्य जब अहंकार शुन्य हो जाता है तब उसका मन निर्मल हो जाता है और मन की निर्मलता ही भक्ति है यह विचार ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर (डॉ.) अर्जुनदेव चारण ने साहित्य अकादेमी एवं राजस्थान बाल कल्याण समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित % राजस्थानी भक्ति परम्परा एवं वांगड अंचल % विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद में शनिवार को स्थानीय साँई पैलेस होटल के सभागार में व्यक्त किए। इस अवसर पर उन्होंने भारतीय एवं राजस्थानी भक्ति परम्परा की विशद विवेचना करते हुए महर्षि नारद को सबसे बड़ भक्त बताकर उनकी भक्ति-साधना को उजागर किया। राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद के संयोजक हर्षवर्द्धन सिंह राव ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य अथिति उपेंद्र अणू ने कहा कि राजस्थान में वागड़ अंचल की भक्ति परम्परा बहुत प्राचीन एवं गौरवशाली रही है जिसमें मावजी महाराज, गोविन्द गुरु एवं गवरी बाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विशिष्ट अतिथि राजस्थान बाल कल्याण समिति के निदेशक मनोज गौड़ ने कहा कि हमें हमारी मातृभाषा राजस्थानी एवं इस भाषा में रचे गये साहित्य को उजागर करना हमारा कर्तव्य है। क्योंकि हमारी मातृभाषा एवं साहित्य हमारी अस्मिता से जुड़ा हुआ है। उदघाटन समारोह के आरम्भ में साहित्य अकादेमी के उप सचिव डॉ.देवेन्द्र कुमार देवेश ने स्वागत उद्बोधन के साथ ही साहित्य अकादेमी द्वारा देश के ग्रामीण क्षेत्र एवं अचल विशेष में किए जाने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी। सत्र का संचालन दिनेश कुमार प्रजापति ने किया।

पाटीदार का अभिनंदन: वागड़ के प्रतिष्ठित लेखक भोगीलाल पाटीदार को हॉल में साहित्य अकादेमी का बाल साहित्य पुरस्कार की घोषणा होने पर साहित्य अकादेमी में राजस्थानी संयोजक डॉ.अर्जुनदेव चारण के सानिध्य में भव्य अभिनन्दन किया गया।

साहित्यिक सत्र: मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के राजस्थानी विभागाध्यक्ष डॉ.सुरेश कुमार सालवी की अध्यक्षता में आयोजित दो साहित्यिक सत्रो में राजेंद्र पांचल ने कृष्ण भक्ति परम्परा एवं वागड़ अंचल, सतीश आचार्य ने राम भक्ति परम्परा एवं वागड़ अंचल, घनश्याम सिंह भाटी ने राजस्थानी भक्ति परम्परा एवं कल्लाजी महाराज एवं डॉ.रेखा खराड़ी ने राजस्थानी आदिवासी भक्ति साहित्य विषय पर अपना आलोचनात्मक आलेख प्रस्तुत किया।